

खजुर की खेती समृद्ध खेती. खजुर की खेती की एकरदीठ आवक - जावक

पौधो के बीच का अंतर : ९ - ९ मीटर										पौधो की संख्या : ५०			
विगत/वर्ष	पहेला	दूसरा	तीसरा	चोथा	पांचवाँ	छठा	सातवाँ	आठवाँ	नौवा	दसवाँ	कुल		
आवक													
फल का उत्पादन (कि.ग्रा.)	०	०	०	३०	५०	८०	१२०	१६०	२००	२००			
एकर उत्पादन (कि.ग्रा.)	०	०	०	१५००	२५००	४०००	६०००	८०००	१००००	१००००			
दाम (प्रति कि.ग्रा.)	०	०	०	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५			
कुल आवक (रु.)	०	०	०	६७५००	११२५००	१८००००	२७००००	३६००००	४५००००	४५००००			१८९००००
खर्च													
मजदूरी का खर्च (रु.)	७५००	८०००	९५००	१५०००	१७५००	२००००	२५०००	३००००	३५०००	४००००			
मटेरीयल का खर्च (रु.)	४०००	४५००	९०००	१००००	१२५००	१५०००	१९५००	२२५००	२७५००	३००००			
खातर खर्च (रु.)	५०००	६०००	८०००	९०००	१००००	११०००	१३५५०	१६९९०	१८३००	२१६६५			
कुल खर्च (रु.)	१६५००	१८५००	२६५००	३४०००	४००००	४६०००	५८०५०	६९४९०	८०८००	९१६६५			४८१५०५
कुल मुनाफा (रु.)	-१६५००	-१८५००	-२६५००	३३५००	७२५००	१३४०००	२११९५०	२९०५१०	३६९२००	३५८३३५			१४०८४९५
लोन का हप्ता (रु.)	१८०००	१८०००	१८०००	१८०००	१८०००	१८०००	१८०००	१८०००	१८०००	१८०००			१८००००
लोनका व्याज (रु.)	०	२१६००	१९४४०	१५१२०	१२९६०	१०८००	८६४०	६४८०	४३२०	२१६०			१०१५२०
अंदाजीत मुनाफा (रु.)	-३४५००	-५८०००	-६३९४०	३८०	४९५४०	१०५२००	१८५३१०	२६६०३०	३४६८८०	३३८१७५			११२६९७५

नोध : खारेक का पौधा अंदाजीत ५५ थी ६० वर्ष तक उत्पादन देता है ।



Kutch Crop Services Pvt. Ltd.

खारेक (खजुर) की सफल खेती पद्धति



Website : www.kcslindia.com

संपर्क

फ: ओफीस एवम नर्सरी- टीस्यु कल्चर लेबोरेटरी ::

महेशनगरके सामने, गुंदा लारोड

मुन्द्रा-भुज(कच्छ) गुजरात पीन. ३७०४२१

E-mail : mktg@kcslindia.com

- सुनील वैष्णव : मो. ८२००९ ९७९०१ (जनरल मैनेजर)
- कल्पेश शाह : मो. ८२००९ ९७९०२ (मैनेजर-बीझनेस डेवलपमेन्ट)
- अरविंद ओ.पटेल : मो. ८२००९ ९७९०७
- हिरजी पी. राठोड : मो. ८२००९ ९७९१०

खारेक (खजुर) की सफल खेती पद्धति

पूर्वभूमिका :-

खारेक (खजुर) कच्छ का कल्प वृक्ष है तथा देश एवं दुनिया का जाना माना फल है। खारेक (खजुर) की पैदावार किसी भी प्रकार की जमीन एवं पानी में हो सकती है। एक बार इसकी खेती करने के पश्चात सम्भवतः ६० वर्ष तक उत्पादन कर सकते हैं।

खारेक (खजुर) की जाति :-

खारेक (खजुर) के अधिक उत्पादन लेने के लिए टिश्यु-कल्चर पद्धति से तैयार किए गए पौधों को हि लगाना चाहिए। वर्तमान में खारेक (खजुर) की दो प्रकार की टिश्यु जातिया मिलती है,

(!!) बरही जात (इजरायली) : इस खारेक (खजुर) का मूल वतन ईराक है और वहां के वैज्ञानिकों (विशेषज्ञों) द्वारा प्रोजेक्ट में यहाँ लाने कि शुरुआत के कारण इसे इजरायली खारेक (खजुर) के नाम से जाना जाता है।

(!!!) लाल जात : यह कच्छ (गुजरात)की स्थानिय लाल फल वाली जाति है, जिसे कच्छ का सर्वेक्षण करके, अधिक उत्पादन देने वाले पौधों का टिश्यु कल्चर करके लेबोरेटरी में तैयार की जाती हैं।

जमीन की तैयारी :-

देश की सभी प्रकार की जमीन से खारेक (खजुर) की खेती सफलता से की जा सकती है लेकिन जहाँ पर पानी का भराव अधिक हो और नमकीन पानी अधिक हों वहाँ इसकी पैदावार कम होती है। जमीन को खेड कर (तैयार कर) के बाद इसमें ९ - ९ मीटर के अन्तर पर ३-३-३ फुट क. खड्डे खोदकर तपने के लिये छोड दिये जाते हैं। तत्पश्चात उसमें गोबर खाद, सेन्द्रिय खाद तथा उदई निमंत्रक दवाई डालकर मीट्री से खड्डे को भर दिया जाता है। पानी से सिंचाई करके ३ दिन बाद पुनः खड्डा करके खारेक (खजुर) के टिश्यु पौधों को लगया जाता है। इसकी सिंचाई के लिए ड्रिप पद्धति बहुत लाभदायक होती है। खजुर के लिये आवश्यक रासायनिक उर्वर को भी ड्रीप पद्धति के माध्यम से सिंचाई करते हैं। जिससे पौधों का जल्द से अच्छा विकास होता है।

खारेक (खजुर) के पौधों के बीच की जमीन का अन्य फसलों के लिये उपयोग :-

खारेक (खजुर) क खेती में, दो पौधों के बीच की दुरी ९ - ९ मीटर की होती है परन्तु कईबार किसान मित्र दुरी घटाकर ८ - ८ मीटर या इससे भी कम कर देते हैं। जिससे पौधों को बडे होने पर नुकसान (वृद्धि कम होगी) होता है।

अंतः किसान मित्रों को यह सलाह दी जाती है कि दो पौधों के बीच की दुरी ९-९ मीटर ही रखनी चाहिए और बीच की जगह का उपयोग करने के लिए कपास, दिवेल (अरण्डी), मुंगफली, ग्वार की खेती शुरूआत के तीन साल तक कर सकते हैं और अगर पानी की उपलब्धि अधिक हो तो पपैया तथा केले की खेती भी की जा सकती है, जिससे आवक बनी रहती है। खारेक (खजुर) के पौधों को लगाने के १५ से २० दिन पश्चात उसके १९-१९-१९, १२-६१-० और ०-५४-५४ (रासायनिक उर्वरक) को पानी में घोलकर स्प्रे पम्प द्वारा या ड्रीप पद्धति से, पौधों को दिया जाता है।

सिंचाई :-

खारेक (खजुर) के पौधों को लगाने के बाद, शुरूआत में प्रत्येक दिन ड्रीप पद्धति से, १५ से २० लीटर पानी देना चाहिए। गर्मी की ऋतुमें ३० लीटर और फलों के लगते समय प्रत्येक दिन १०० से १५० लीटर पानी से सिंचाई की जाती है। वर्षा ऋतु तथा ठण्ड की ऋतु में पानी की मात्रा कम कि जाती है।

रोग :-

खारेक (खजुर) की खेती में वेसे तो कोई रोग नहीं आते हैं, परन्तु एक प्रकार का किट रोग (पामवीवील) तथा गोडा किटक नासक रोग आ सकते हैं, जिसकी शुरूआत के समय में पहचान कर पौधों को बचाया जा सकता है।

उत्पादन :-

खारेक (खजुर) के पौधों को लगाने के तीन-चार साल बाद पौधों में फूल लगने लगते है। इन फूलों पर बढिया नर खारेक (खजुर) के पौधों से परागकण लाकर छिडकाव किया जाता है, जिससे फल लगने लगते हैं। खारेक (खजुर) की खेती में तीसरे - चौथे साल में ही उत्पादन शुरू हो जाता है, यह ३० कि.ग्रा. से शुरू होकर २०० से २५० कि.ग्रा. तक फल होता है।

:: अस्वीकार्य कलम (साहित्य उपर) ::

उपरोक्त माहिती सामान्य खेती मार्गदर्शिका पूरी करने के लीये दी गई है। उपरोक्त माहितीका उपयोग स्थानिक/प्रादेशिक जमीन ऋतु ओर खेती प्रक्रियाओ/ पध्धति के अनुसार सोच समजकर योग्य तरीकेसे करनेकी जवाबदारी खेडुत/ वपराशकर्ताकी रहेगी।

उपरोक्त माहितीके अमलीकरण दरमीयान नुकशान के लीड कंपनी की जीम्मेदारी नहीं रहेगी। जीसकी नोंध लेने की बिनती है।